अध्याय : 2

कमलेश्वर के उपन्यासों का सामान्य परिचय

अध्याय : 2

कमलेश्वर के उपन्यासों का सामान्य परिचय

कमलेश्वरजी अपनी कहानियों एवं उपन्यासों के जरिये युग सत्य को उद्घाटित करने वाले साहित्यकार हैं। उनका जीवन के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण है। युग-बोध को ही उन्होंने सदैव प्राथमिकता दी है। वे प्रगतिशील कथाकार के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। यही उनकी बड़ी विशेषता रही है। उनके उपन्यासों में जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति की हुई है। उन्होंने जीवन के यथार्थ को बिलकुल प्रगतिशील प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर सदैव ही अपने युग की किसी समस्या को सोचते ही रहते हैं। उनके सभी उपन्यासों और कहानियों में चिन्तन का स्वर प्रमुख रहा है। उनका यह चिन्तन "बुध्दिजीवी का चिन्तन है, जो जनसाधारण के लिए ही है।"[1]

कमलेश्वर ने अभी तक छह उपन्यास लिखे हैं। जिनका अपना महत्व और अपनी विशेषता रही है। उनके कुछ ऐसे भी उपन्यास हैं जिनपर सफल फिल्में बन चुकी है। उनके प्रमुख उपन्यास निम्नांकित हैं -

1· एक सड़क सत्तावन गलियाँ
2· डाक बंगला
3· लौटे हुए मुसाफिर
4· तीसरा आदमी
5· समुद्र में खोया हुआ आदमी
6· आगामी अतीत

1. एक सड़क सत्तावन गलियाँ

यह कमलेश्वरजी का सबसे पहला उपन्यास है। यही उपन्यास 1956 में हंस नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उपन्यास का नायक है सरनामसिंह। इसके शेष पात्र हैं शिवराज, रंगीले, बंसी, हेम और कमला। यह उपन्यास आज़ादी के पूर्व लिखा गया था। इसमें मध्यमवर्गीय आर्थिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन के सजीव चित्र पाये जाते हैं। सरनाम का चरित्र-चित्रण विशेष प्रभावशाली बन पड़ा है। टूटते जाने की प्रक्रिया का अंकन इस उपन्यास मे प्रमुख रहा है। युग के सत्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यही उपन्यास बाद में प्रकाशक की भूल से "बदनाम बस्ती"के नाम से प्रकाशित हुआ था। कमलेश्वरजी को उपन्यासकार के रूप बड़ी ख्याती प्राप्त हुई है।

एक सड़क सत्तावन गलियाँ की एक बड़ी विशेषता यह है कि आकार में छोटे होने के बावजूद भी विस्तार से काफी बड़ा है। जिसमें गहराई की जटिलता है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसमें पात्रों की संख्या अधिक है। उन सभी पात्रों के बारे में सच्ची जानकारी दी गयी है। उन्होंने कस्बे की जिन्दगी का जीता जागता चित्रांकन इस उपन्यास में किया है। मास्टर हबीब, संपादक निर्मोही और बाजा मास्टर जैसे असंख्य व्यक्तियों की आकांक्षाओं की दस्तावेज का चित्रण इसमें है।

उपन्यास का प्रमुख पात्र है सरनामसिंह। अन्य पात्र हैं रंगीले, शिवराज, बसंरी, बाजा मास्टर और कमला। ये सभी पात्र अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें आदमी की अच्छाइयों, बुराइयों, नफरत आदि भावों को चित्रीत किया है। कमलेश्वरजी ने एक सड़क सत्तावन गलियाँ में जिस परिवेश का चित्रण किया है वास्तव में मैनपुरी कस्बे का ही परिवेश है। यही वह मैनपुरी कस्बा है, जहाँ पर कमलेश्वरजी का जन्म हुआ। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में निम्न-मध्यमवर्ग समाज के आर्थिक, राजनीतिक जीवन के यथार्थ का चित्रण किया गया है।

कमलेश्वरजी ने कथा को अधिक यथार्थ और विश्वास योग्य बनाने में मैनपुरी का आधार लिया है। इसमें स्वाधिनता के पहले और बाद की परिस्थितियों

का चित्रण किया गया है। कम्युनिस्ट-कांग्रेस विवाद, साम्प्रदायिकता, समाचार पत्रों की दयनियता, ड्राइवरों के व्यस्त जीवन का तनाव और प्रेम में टूटते बिखरते जीवन के यथार्थ का चित्रण किया गया है। नेता और उनके नारों के बीच शिवराज हेम, कमला, बाजामास्टर, हफीज साहब और निर्मोही जैसे अन्य व्यक्तित्वों के टूटने की आवाज नहीं आती है। कुल मिलाकर टूटे हुअे बिखराव का चित्र उभरकर पाठक के सामने आता है जो एक सड़क सत्तावन गलियाँ का प्रभावपूर्ण अंकन है।

मैनपुरी कमलेश्वरजी का जन्म स्थान रहा है। मैनपुरी जीवन की प्रामाणिक जानकारी कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत की है। जिसमें लोगों की आशाओं-निराशाओं, रूदन, प्रेम, तनाव, राजनीति, नाटक मंडली, रामलीला, आदि बहुत सारी बातों का ही बड़ा संवेदनाजन्य चित्रण किया गया है।

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" का प्रारंभ बरसात के मौसम से हो जाता है। बरसात के मौसम से यह बस्ती कैसी वीरान और उदास हो जाती है उसका वर्णन कमलेश्वर ने किया है। रामलीला का सिलसिला शुरू हो जाता है और बाजामास्टर हारमोनियम से एक दर्द भरी आवाज निकालता है। पंडितजी ऊँची आवाज में बोलने लगे, "·····माताओं और बहनो। आप लोगों से विशेषकर एक बात कहनी है। आप देवियां मरियादा पुरूषोत्तम भगवान रामचन्द्र की लीलाएँ देखने के हेतु आती है, लेकिन अपनी घरेलू चर्चा यहां भी चालू रखती है। सो ऐसी माताओं और बहनों के लिए उपदेश है कि······"[2]

शिवराज औरतों में आरती घूमाने लगता है जिस बीच बाजामास्टर अपनी विवशता को शिवराज के सामने प्रकट करता है। शिवराज चार साल पहले जिस बस्ती में आया था। उन दिनों इसी बस्ती में एक महात्मा आये हुए थे। सर्वानन्दजी जिनका चारों ओर बोलबाला था। शिवराज के पिता ने उनको जीवन को एक नया रूप मिल गया था। रंगीले और शिवराज में भगवान का अंस प्रवेश कर रहा था। सरनामसिंह भी शिवराज की ओर आकर्षित हो गया। "ऐ मियाँ गड़बड़ मत मचाओं सुनने दो। हां सिंहजी, दूसरी तान छिड़े····।"[3]

बंसिरी के दिल में सरनामसिंह के खिलाफ आग भड़क रही थी। उसको औरत बनाने में सरनामसिंह का ही हाथ था। बंसिरी किसी भी घरवाली बनकर चैन से मान जाना चाहती थी। शिवराज अपनी पिता की मृत्यु के बाद वापस आश्रम लौटता है। कुछ दिनों के बाद वह आश्रम को छोड़कर सरनाम के घर ही रहने लगता है। सरनामसिंह कहता है, "....तुम्हें देखकर मुझे अपनी जवानी याद आ जाती है....बस यही समझ लो, तुम जो आज हो, वही है सोलह साल पहले था। यही तेजी, यही तेवर और यही मासूमियत। तुम्हें देखकर अपने उन दिनों की याद कर लेता हूँ....।"[4]

डाकू मंगला का प्रसंग हमारे सामने उपस्थित होता है। वास्तव में वह शराबी है। बंसिरी गवाह के रूप में हमारे सामने आ जाती है। वह बताती है कि असल मुलजिम तो सरनाम ही है। गिरधारी बंसिरी को परेशान करता है। सरनाम सोरों के मेके एक नौटंकी में घूम जाता है। वही बंसिरी से उसकी मुलाकात हो जाती है। सरनाम के दिल में बंसिरी के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है। मगर बंसिरी उसको ठुकराती है। रंगीले भी उसके साथ रहकर उनको फिल्म दिखाता था। उसकी किसीसे भी दुश्मनी नहीं थी।

देवानन्द से उसकी दुश्मनी हो जाती है, क्योंकि देवानंद से सुरैया प्यार करती थी। सुरैया रंगीले के सपनों की रानी थी। रंगीले पुलिसवालों में बड़ा ही मशहूर था। किस्मत उसे धोका देती है वह बेकार बन जाते हैं। उनका दिमाग भी बिगड़ गया है। "......आइए आइए....रामराज जिसमें परेम अदीब शोभना समरथ जैसे नामी सितारों ने काम किया है। खेल शुरू होने जा रहा है.... भगवान का दरसन कीजिए।"[5]

चारों ओर बड़ी सरगरमियां थीं। रंगीले नेता बन गया था। बंसिरी रंगीले की ओर खींच जाती है। हेम की शादी हो चुकी थी। शिवराज खोया खोया रहने लगा था। बाजामास्टर कमला नामक एक बाजारन औरत को उसे मिलवाता है। उससे शादी करने के लिए भी तैयार हो जाता है।

कमला के पीछे शिवराज पड़ा हुआ है। बंसिरी की हालत नाजुक थी। बंसिरी परेशान होती थी।····वह सरनाम को सता साल के लिए जेल जाते हुए देख पाएगी···देख भी पाएगी या नहीं, मन कैसा होगा ? पछतावा तो नहीं होगा ? पछतावा कैसा·····"। [6] सरनाम पिछले दिनों से छुटी पर था। वह रंगीले से मिलना चाहता था। मगर रंगीले उससे मिलना नहीं चाहता। जाने से पहले वह एक बार रंगीले और बंसिरी से मिलना चाहता था। मगर उनके घर के पास जाकर भी वह उन्हें देख नहीं पाया।·····"चलती गाड़ी से सूर निकालते हुए सरनाम अपने उस छोटे से स्टेशन को पीछे छूटते देखता रहा····गाड़ी चलती गई····दूर बस्ती की बत्तिया टिमटिमाती रही····अंधेरे रात में यादों की लो····से चिराग। बस्ती बिरानी हो गयी·····अब यह मोहक, नशे में डूबी उदास रातें वह कहां देख पाएगा। डबडबाई हुई आँखों के पार सब डूब गया·····।"[7]

रंगीले पिछले दिनों मुकदमे की चाल को समझ रहे थे। मुकदमा उसकी समझ के बाहर ही होता जा रहा था। अस्पताल में ही प्रसव का इन्तजाम हो सकता था, इसलिए बंसिरी की हालत नाजूक हो रही थी। मजदूरों का पेट कट जाएगा। "·····क्या बताएं, तुम लोगों से प्रेम मुहब्बत हो गई थी, पर मजबूरी है। मेरा बस चलता तो अपने एक भी आदमी को बेकार न होने देता लाचारी है अब तो ?·····"[8]

कचहरी में अहाते खाली भीड़ रही थी। लोग अपना अपना काम छोड़कर डकैती का फैसला सुनने के लिए जमा थे। जब डकैती के मुजरिमों रिहाई का फैसला सुनाई पड़ा तो कमरा गूँज उठा। रंगीले को झूठी गवाही देने के जुर्म में तीन साल की जेल सजा हो गयी। रंगीले एकदम बेहोश होकर वही बैठ गया। सरनाम उसे सांत्वना देने तक नहीं आया।·····"आँखों के नीचे अंधेरा छा गया····यह क्या हुआ मेरे भगवान। अब क्या होगा ? सर पकड़कर वह वही बैठा रह गया है····।"[9]

शिवराज मिला तो उसने आँखे पोंछते हुए कहा - "भगवान् की यही मर्जी थी। परबस हो गया मैं तो। भइया, जरा उसका खयाल रखना अस्पताल

में देखभाल रखना, तुम्हारे ऊपर ही छोड़े जाता हूँ उसे, जरूरत पड़े तो उसका एकाध जेवर बेच लेना, पर गड़बड न होने पाए.....।"[10]

शिवराज ने आश्वासन दिया कि चिन्ता करने की बात नहीं है। रंगीले की आँखों में याचना भरी कृतज्ञता थी। उनके मन में चिन्ताएँ एवं अभिलाषाएँ घुमड़ रही है। सरनाम का मन उदास होकर वे घर की तरफ बैठे जा रहे थे। ..."वह हंगामा नहीं था....वह जिन्दगी नहीं थी.....सब कुछ नया था, अच्छा था, पर सब अच्छाइयों के बीच कुछ ऐसा था जो नहीं था....रीता रीता उजड़ा - उजड़ा।......"[11]

बंसिरी के बच्चे को लेकर सरनाम अस्पताल से रंगीले के घर पहुँचा देता है। घर में दीया बत्ती जलाने के लिए कुछ भी नहीं है वह भी बंसिरी देती है और उसकी सहानुभूति करने के लिए भी तैयार हो जाता है। ......"और अपनी गली के लिए मुड़ते हुए सरनाम ने हलकी-सी रोने की आवाज सुनी थी....पता नही बंसिरी क्यों रो पड़ी.....यह सोचता हुआ वह अपने सुनसान घर में लौट आया था.......।"[12]

2. डाक बंगला

कमलेश्वरजी का "डाक बंगला" एक सफल उपन्यास है। यह उपन्यास एक असाधारण नारी इसके माध्यम से एक साधारण नारी नियति एवं बाह्य संघर्ष को रूपायित करनेवाला उपन्यास है। यह उपन्यास पढ़कर पंाठक सोचने के लिए विवश हो जाते हैं। उदाहरण के लिए जिनमें जीवन का क्रूर यथार्थ व्यंजित होता है, "पहाड़ी रास्तों पर चलते चलते गंदी दुकान की चाय भी पीनी पड़ती है।"

कमलेश्वर ने "डाक बंगला" उपन्यास में जीवन के यथार्थ का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह अन्य उपन्यासों से भिन्न है। कमलेश्वरजी के सभी उपन्यास निम्न-मध्यवर्ग का बिखराव और टूटन की आर्थिक विषमता से सम्बध्द हैं, परंतु "डाक बंगला" एक ऐसा उपन्यास है जिनमें आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्‌घाटित हुई है। इसके माध्यम से नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रीत किया गया है।

इरा की स्थिति का सम्बध्द जटिल और संकुल सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है। "डाक बंगला" की कहानी इरा नामक एक युवती के प्रेम कहानी है। वह एक ऐसी बदनसीब युवती है कि जिसने अपनी जिन्दगी में चार पुरूषों से प्रेम किया है। वे चार पुरूष हैं - बतरा, सोलंकी, मेजर, डाकटर विमल। मगर इन चारों में से किसी एक ने उसको अंतिम प्यार नहीं दिया। "डाक बंगला" इस उपन्यास में इरा एक महत्त्वपूर्ण पात्र है।

कश्मीर के दौरान पर इरा की तिलक से मुलाकात होती है। अपनी दर्दभरी कहानी तिलक को सुना देती है। तिलक इरा से प्यार करने लगता है। इरा से वह विवाह करने का प्रस्ताव रखता है। मगर इरा साफ इन्कार करती है, क्योंकि जिसको उसने अपना सबकुछ बता दिया है उसके साथ वह विवाह नहीं करना चाहती थी। जब इरा चण्डिगढ़ चलने के लिए तैयार हो जाती है तो तिलक उसको बिदा देने के लिए स्टेशन पर आ जाता है। मगर इरा तिलक से बात नहीं कर सकती है। इरा के बिना कुछ कहे चले जाना तिलक को अच्छा नहीं लगता। वह उदास होकर चला जाता है।

एक दिन सोलंकी से इरा की मुलाकात होती है। उसको देखकर तिलक को ताज्जुब हुआ है। मगर इरा ही सब कुछ बता देती है। इरा और सोलंकी दोनों में निकटता बढ़ती है। सोलंकी और इरा एक शाम लिद्दरवट के डाक बंगले में गुजारते हैं। कमलेश्वरजी ने सोलंकी के शरीर का वर्णन इस प्रकार किया है - "रूखे मोटे मोटे बाल, पुष्ट भरा हुआ शरीर। मोटे मोटे साफ तराशे होंठ। कनपटियों पर मांसलता कुछ अधिक उसके मुँह की खाल खुरदरा थी। उसकी कोचले की कहीन कनियों सी बढ़ी हुई दाढी और मूंछे थी। उसके नथुनों में भी बाल थे। कान पर काल रेशे। मेजर सोलंकी शराबी था। वह हमेशा घोडा दौडता रहता है। सोलंकी भी इरा को अपना अंतिम प्यार नहीं दे पाता। "....आज जिन्दगी की सच्चाईयाँ क्षणों से चालित हैं....और कई कई सचाइयां एक साथ समांतर चलती है....ताड़ के पेड़ो की तरह सत्य समांतर खड़े हैं। ...जिनसे बने बनाए सत्यों से अलग जितना ही "झूठा" जीवन जिया है...."[13]

इरा का जीवन गाथा एक ऐसी ही थी "झूठ" के सिवा और कुछ नहीं था। इरा हमेशा ही अकेली रही है। उसकी कमजोरी यह है कि वह आदमी के सिवा किसी को प्यार नहीं कर सकती इसलिए झूठ भी नहीं बोल पाती। इरा को एक दिन ऐसा लगता है कि मेरे जीवन में एक राजकुमार आयेगा। किसी एकान्त में मुझे उठा ले जायेगा और पंख पसारकर उसमें मुक्त विाहर करूंगी। "एक राजकुमार ने मुझे मेरा सितारा दिखाया था....सबसे बड़ा सितारा.....जो डबडबाई आंख की तरह चमक रहा था। आज मुझे सच लगता है कि वह सितारा चाहे मेरा न रहा हो....पर उसका शाप मेरे जीवन का शाप अवश्य है....।"[14]

इरा राजकुमार के इन्तजार में बैठी हुई थी तो कभी वह सपनों के राजकुमार का स्पर्श महसूस करके उसके सारे शरीर में गुदगुदी होने लगती है। कभी वह रो लेती है तो कभी बेसुध सो सोयी रहती है। इरा को माँ नहीं थी। उसके पिताजी आर्मी में थे। नौकरानियों के हाथों में वह पली थी। "डाक बंगला" इस उपन्यास में इरा ही पात्र प्रमुख प्रधान रहा है।

इरा युनिवर्सिटी में पढ़ने लगी थी। कालेज की पढ़ाई खत्म हुई थी। नाटकों में अभिनय करने में भी उन्होंने दिलचस्पी रखी थी। उन्हीं दिनों शिमला के एक नाटक समारोह में एक व्यक्ति से इरा की मुलाकात हुई थी - विमल से। दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। इरा का विश्वास कभी डैडी नहीं समझ पाये थे। नाटक में भाग लेना उनको काफी पसन्द नहीं है। लेकिन वह अपने विश्वास को लेकर ही जीना चाहती थी। जिन्दगी के सारे उतार चढाव या दुख सुख, पाप-पुण्य दो घण्टों की परिधि में ही सिमट आते हैं।

इरा को विमलने विश्वास दिलाया था "....इरा हम तुम दोनों रंगमंच के लिए समर्पित हैं हम जीवन भर जिसी में लगे रहेगे....।"[15] इरा की पढ़ाई का अखिरी साल था। उसको दिल्ली में ड्रामा कैम्पिटीशन जाने से उसके पिताजी ने मना कर दिया था। मगर उन्होंने विमल को तो वचन दिया था। डैडी ने उसे मना कर देने के बाद भी वह अपनी मर्जी के खिलाफ कैम्पिटीशन में हिस्सा लेती है। पिताजी से उसका सम्बन्ध टूट गया था। इरा और विमल दोनों दो साल तक

दिल्ली में स्थायी रंगमंच स्थापित करने की जी तोड़ कोशिश करते रहे। पर कर्जे के सिवा हाथ में कुछ नहीं आ सका।·····कितना सुखद था वह दौर···विमल के साथ बीतते वे दिन····इसी बीच डैडी का ट्रान्सफर हो गया था···और मैं होस्टल में रहने लगी थी। जब भी मौका लगता, विमल के पास चली जाती····।"[16]

इरा के नौकरी का प्रबन्ध विमल ही कर देता है। बतरा साहब के फ्लैट में उसको नौकरी मिली थी। काई खास काम नहीं था सिर्फ "टेलीफोन काल्स अटेण्ड करना" इसके लिए इरा को चार सौ रुपये तनख्वाह मिलती थी। बतरा तो शराब का बेहद शौकीन आदमी था। बतरा की सज्जनता शराब पिने पर उभरती है। उसे रिकार्डों का बहुत शौक था। इरा को उसकी शराफत पर शक होने लगता है। एक दिन बतरा ने उसको एक तस्वीर दिखाते हुए कह दिया "···यह मेरे पंजाब की तसवीर है····तुमसे भी बहुत मिलती जुलती है।"[17] उस समय इरा ने कोई जवाब नहीं दिया।

बतरा के प्रति विमल के दिल में शक बढता ही जा रहा था। उसके शक को खत्म करने के लिए बतरा की नौकरी छोड़ देने का इरा सोच लेती है। मगर भूखे मरने की नौबत उसको सताती है। इरा के पिताजी ने तो दो बच्चेवाली एक खुबसूरत विधवा से शादी कर ली थी। विमल की उदासी बढ़ती ही जा रही थी। उसके सपने साकार नहीं हुए थे। उसका मन आत्मा और शरीर एकदम खाक हो गये थे। एक दिन हताश होकर विमल बम्बई चला जाता है। मगर अकेली रहना उसके वश की बात नहीं थी। किसी का सहारा ही उसे चाहिए था। तभी तो वह तिलक से कह देती है, ·····पर तिलक यह तुम्हारी दुनिया बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बगैर आदमी के विना रह नहीं सकती····चाहे उसके साथ उसका पति हो या बाप। काई न हो तो नौकर ही हो। इसलिए "हर लड़की एक कवच ढूँढ़ती है····वह चाहे पति का हो या भाई का या बाप का किसी भी झूठे रिश्तेदार का। इस कवच के नीचे ही अच्छा जीवन बिताती है। उसे पहनने के लिए जैसे एक साड़ी चाहिए वैसे ही यह कवच भी चाहिए। "विमल के जाते ही मैं नंगी हो गई थी····।"[18]

जो आदमी इरा के जीवन में आया उससे वह यह कहती रही "....मेरे जीवन में तुम्हारे सिवा कोई नहीं आया आज तक....।"[19] वह उस आदमी को अपना सब कुछ बताकर उम्मीद रखकर जीवन बीताती है।

बतरा ने शीला के बारे में सारी कहानी इरा को बाता ही दी थी। एक दिन शीला और इरा को भी परिचय हो जाता है। शीला इरा को बतरा के यहाँ से नौकरी से हटा देती है। बतरा के साथ इरा का रहना शीला को पसन्द नहीं है। इरा को नौकरी से छुट्टी देने पर इरा बहुत उदास होकर रो पडी थी। "....नौकरी । नौकरी । यह शब्द मुझे छेद गया। बतरा की बगैर मरजी यह सब नहीं हुआ होगा, यह मैं जानती थी। क्या मैं सिर्फ बतरा की नौकर थी ? क्या सम्बन्धों की नींवे इतनी पोली होती है....क्या यह सब एक कीचड़ है, जिससे हर आदमी उकताकर भागता है....।"[20]

इरा हमेशा ही अकेली रही है। रात के अंधेरे में पड़ी अकेली रही है। उसने सारा सामान झुंझलाहट में बिखर दिया और शीशा तोड़ दिया था। परेशानी से सड़क पर खड़ी होकर मन में आत्महत्या का ही सवाल उठता है। उसका मन भय से डर रहा है। मगर उसकी एक मजबूरी थी - तिलक। बतरा को वह घृणा नहीं कर सकती थी। उसीके दुःखों ने तो इरा को जीत लिया था। "....मैं तुम्हें देखती हूँ....तुम्हारे इन बूढ़े हुए बालों को देखती हूँ तो ममता-सी उपजती है मन में। तुम सांस लेते हो, तुम्हारे उठते-बैठते सीने की इस गति से मुझे लगाव होता है। तुम जब बार बार पलके झपकते हो, तो तुम्हारे चेहरे से मासूमियत बिखरती है। यही सब मुझे बहुत प्यारा लगता है||....।"[21]

इरा अपनी सहेली दमयन्ती के पास नागपुर चली जाना चाहती थी। मगर बतरा ने ही उन्हें जबरदस्ती से रोक लिया था। बतरा ने ही इरा को ट्यूटर-गार्जियन की एक जगह पर नौकरी दिलवायी थी। उसको यह मालूम नहीं था कि यह नौकरी बतरा ने ही दी है। नहीं तो वह नौकरी नहीं करती। भूखों मरना ही पसन्द करना चाहती है।

इरा को अपने जीवन में हर आदमी की याद आती ही रहती है। वैसे ही अचानक एक दिन डॉ॰चन्द्रमोहन के बारे में उसके मन में याद आती है। उसके बच्चों की देखभाल करना या उनको पढ़ाने का काम इरा ही करती थी। चन्द्रमोहन के साथ उनको डिबरूगढ जाना पड़ता है। डाक्टर ने जब उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो इरा ने साफ इन्कार किया। इरा उसके बच्चों की देखभाल करती है। आखिर एक दिन हार कर ईरा ने शादी से स्वीकृति दी। दूसरे महीने शिलांग में जाकर उन दोनों ने शादी कर ली। जव तक दोनों ने शादी नहीं की, डाक्टर ने कभी उसके शरीर को छूने की हिम्मत भी नहीं की थी। इसलिए यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति का अन्धाप्रेमी आदर्शवादी होता है। ...."अब कल्पना करो मेरे सुख की। चारों तरफ हताश होकर मैं अपने को मारने पर तैयार हो गई थी। एक इरा उसी दिन मर गयी।। तिलक....एक इरा उसी दिन जिन्दा दफन हो गई.....।"[22]

इरा और डाक्टर के कभी कभी संघर्ष होते ही रहते हैं तो डाक्टर अपनी गलती के लिए इरा से माफी माँगता और इरा के प्रति करूणा से प्रेरीत है। इरा एक दिन अपनी सहेली के पास नागपुर चली जाती है। नागपुर आकर भी वह सांस नहीं ले सकती है। नागपुर में कुछ दिनों के बाद डाक्टर के बीमार रहने का तार मिला। तार मिलते ही वह फौरन डिबरूगढ पहुँचती है। वही एक हॉस्पीटल में डाक्टर बेहोश पडे रहे थे। और आखिर उसने दम तोड़ ही दिया। उस वक्त इरा फूट फूटकर रो पड़ती है। डाक्टर को किसी विद्रोही ने गोली मार देने से ही उनकी यही हालत हुई थी। डाक्टर का अस्फुट स्वर यह है - "अब जैसा तुम चाहो।" इरा को बार बार सुनायी पड़ता रहता है।

डाक्टर बहुत ही समझदार था। उसकी मृत्यु के बाद उनके जीवन का तीसरा और दुखद अध्याय समाप्त हो गया और जीवन को एक नया मोड मिला था। वह सारी कहानी इरा ने तिलक को बता दी थी। तिलक उससे शादी का प्रस्ताव कर लेता है तो एक ही जबाब देकर कहती है उसके साथ वह कदापि

शादी नहीं कर सकती। दुखद अध्याय में वह कह देती है कि डाक्टर एक पारस की तरह था। डाक्टर ममतामय और करूण भाव से प्रेरीत है। इरा के पूरे व्यक्तितत्व को उसने मथकर छाव देने का प्रयास किया है। डॉक्टर की आत्मा को श्रध्दांजलि अर्पित करने के बाद उसका अंग ममता से पुलक रहा था। "....अब जैसा तुम चाहो। उसकी खामोश आवाज बार बार मन में घुमड़कर गूंजती थी - अब जैसा तुम चाहो....प्यार का झाग जमा हुआ था।"[23]

इरा के जिन्दगी में नये नये मोड़ आते रहे। कभी किसी कम्पनी में सेल्स गर्ल का काम करना पड़ता था। उन्होंने सपने में एक भयानक सपना देखा था। इरा को दमयन्ती का एक खत भी मिलता है जिसमें लिख। था कि विमल के बीमार रहने का जिक्र ही किया था। वह उससे मिलने जाती है। विमल की बीमारी बढ़ती ही जा रही थी, बेचारे विमल ने एक दिन बिदा ली थी। अकेली इरा ही रह जाती है। ".....पर मैं अकेली रह गई...अब तो बिल्कुल अकेली हूँ। एक साल बाद विमल ने अस्पताल में आंखे मूंद ली। कहते कहते इरा रो पड़ी सब कुछ खोकर भी हाथ नहीं आया। यही मुझे पाना था तिलक....मुझे भोजपत्र के वन की याद आती है....जहाँ अंधेरे में भटकते हुए ममदू की आवाज का सहारा था.....जो हमें मौत से उबार लाई थी....अब फिर कुछ कुछ वैसा ही अंधेरा है....वही घूटन है....कोई आवाज नहीं है।..और कोई भी ऐसा नहीं है जिसे आवाज दूं....।"[24]

इरा एक दिन नौकरी के सिलसिले में चण्डिगढ जाती है तो तिलक उसको बिदा देने के लिए रेल स्टेशन पर चला जाता है। रेल छूटते वक्त इरा खिडकी पर भी आयी नहीं। तिलक दुःख से प्रेरीत होकर चला जाता है। तिलक को इतना मालूम हुआ है कि इरा चण्डिगढ में नौकरी करती होगी या कहीं और चली गयी होगी यह उसका मन प्रस्ताव करता है।

३· लौटे हुए मुसाफिर

"लौटे हुए मुसाफिर" कमलेश्वरजी का एक श्रेष्ठ उपन्यास है। यह उपन्यास कस्बे के जीवन से प्रेरीत है। इसमें जिस बस्ती का वर्णन है उसका नाम है "चिकवों की बस्ती"। हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे के दुख दर्द में एक दूसरे के लिए झगड़ते रहे हैं इसका पूरा वर्णन है।

बस्ती में रहनेवाले लोग स्वाधीनता के साथ आगे बढ़ाने का काम करते हैं। राधेश्याम और युनूस दोनो पकड़े गये थे। सन 1857, 1942, 1945 इसका परिवर्तन चित्रीत किया गया है। "लौटे हुए मुसाफिर" के प्रारंभिक पृष्ठो में 1857 की बसती का निर्देश किया गया है। सन 1942 के आन्दोलन में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने सक्रिय हिस्सा लिया। कुछ दिनों के बाद मुसलमानों ने जिना साहब की चर्चा शुरू हुई। फिर सन 1945 का वक्त आने के बाद एक बूँद खून भी नहीं गिरा····लेकिन भूचाल आया।

"लौटे हुए मुसाफिर" में जिस बस्ती में रहनेवाले पात्र यह है - नसीबन, सतार, साई, सलमा, बच्चन आदि। नसबीन मानवीय दृष्टि की मूर्ति है। सतार एक उखड़ा हुआ आदमी के रूप में सामने आता है। साई एक धार्मिक, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता के प्रतीक है। सलमा एक मानसिक रूप से कस्बे के प्रगतिशील लोगों को साथ देकर जिन्दगी का सामना करती है। बच्चन यह उपन्यास का एक अप्रस्तुत चरित्र है। यह ध्यान देने की बात तो यह है कि उपन्यास के सारे पात्र पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ कर पाठक मन को संवेदनशील बनाते हैं।

·····सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था। इसके साथ उपन्यास की शुरूवात हो जाती है। विभाजन के पहले इस बस्ती में हंगामा या शोर नहीं था। बस्ती बड़ी ही खुबसूरत थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही शान से जी रहे थ। उनमें साम्प्रदायिकता बिलकुल नहीं थी। मगर कई दिनों के बाद नफरत की आग ने इस बस्ती को खाक करने का काम किया है। सन1857 में अंग्रेजों से लोहा लिया था। तो मजहब और कौम लोगों ने कंधा से कंधा मिलाकर गोलियों को सीनों में झेलने का प्रयास किया था।

भीतर भीतर एक आग ही सुलग रही थी। किसीके दिल में क्या है, इसमा पता किसी को भी नहीं था। हिन्दू और मुसलमान दोनों नफरत की आग से भड़क रहे थे। नफरत की आग की चिनगारियाँ धधकती है। बस्ती को साँप सूंघ गया था। रातें बड़ी मनहूस थी। हैरत और शक से एक दूसरे को देखते हैं। मन में शंकाओं के साँप फुफकारने लगते थे और अजनबीपन की चमक उठती है।

सन 1947 में पाकिस्तान बना और चिकवों की बस्ती उज़ड गई। "मेरे मोला मदीने बुला ले मुझे····।"[25] वह सतार गाया करता था। सतार पहले सर्कस कम्पनी में घोडों की जीन कसा करता थी। इस बस्ती के चिकवें भी पाकिस्तान जाने के हौसले से भागे थे। आखिर हिन्दुओं में सिर्फ बच्चन रह गया था बस्ती में। साई की कोठरी ही बस्ती सबसे रोनकदार की जगह थी। सतार और सलमा का मामला निपटाने की कोशिश की थी।····शायद एक बेहतर जिन्दगी मिले मुसलमानों को||···यहाँ तो बड़ी गरीबी है, न करने को काम है, न रहने की जगहा"।[26]

नसीबन ने नये नोजवान को देखा, तो साई से पूछा था, "बड़ा समझदार और खुदा से डरनेवाला आदमी है - नाम सतार है एक सर्कस में काम करता था, अब छोड़कर चला आया है। कुछ अपना काम शुरू करना चाहता है।"[27] सुनकर नसीबन गहरी नजर से साई को देखता है।

जिस बस्ती के हिन्दू और मुसलमान दोनों अपने अपने ढंग से जी रहे थे। मगर सलमा का पति मकसूद और यासिन जब इस बस्ती में आ जाते हैं। बस्ती के मसलों में हाथ बटाने का मकसूद का पहला ही मोका था। यासीन साहब अलीगढ़ के सियासी क्लर्क । हैं। मुस्लिम लीग में काम करते हैं और मुसलमानों की भलाई की खातिर घुमते रहते हैं। अलीगढ़ का सियासी कारकुन यासीन कह रहा था, "तो बात जंग की नहीं है। इस वक्त हमें इन भीतरी बातों को समझना है जो जिन्ना साहब कर रहे हैं। आप हिन्दुओं की चालों को नहीं समझते। हिन्दू कोम कभी हमारे साथ नहीं हो सकती। हमने हिन्दुस्तान पर सदियों की हुकूमत की है। आज़ादी के बाद उसी का बदला वे मुसलमान कौम से लेंगे, यह बिल्कुल

तय है।|····।"[28] साई की भौहें टेढ़ी हो गई और बोला "कानगरेस तो हिन्दुओं की जमात है।"[29]

मकसूद और यासिन दोनों मिलकर नफरत की चिनगारी को भड़काते रहते हैं। आखिर यासिरन, मकसूद और साई तीनों मिलकर विद्रोह को भड़काने का प्रयास करते रहते हैं। "हिन्दू हिन्दू हैं और मुसलमान मुसलमान हैं····।"[30] हिन्दुओं में भी मुसलमानों के प्रति नफरत पैदा हो गयी।····" मुसलमान हिन्दुओं की नफरत की दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं। हमारी परम्परा तो शिवाजी की है जिन्होंने हिन्दू या मुसलमान के प्रति विद्रोह की भावना से, नफरत की आग से समझौता करने का प्रयास नहीं किया है।

"औरंगजेब ने जो अत्याचार किये हैं, हिन्दू धर्म को जिस तरह भ्रष्ट किया है, उसी का बदला तो लेना है। हमारी परम्परा है, राणा प्रताप की, शिवाजी की, जिन्होंने म्लेच्छों से कभी समझौता नहीं किया"[31] भीतर ही भीतर एक बहुत बड़ा अंतर महसूस रहा था। सड़क पर चलते हुए लोग अपने चारों तरफ एक ऐसा सैलाब सा नजर आ रहा था क जिसमें नफरत के कीड़े बिलबिला रहे थे···· जाने पहचाने लोगों के मुर्दा चेहरे उतराते हुए बहते रहे थे। वे चेहरे है इन्सान जीता है। जिनमें अपमान था।

इमली के नीम पेड़ पर हिन्दू महासभा के झण्डे फहराये थे। घरों पर छोटे ऊँ के हरे झण्डे थे। काली टोपीवाले गांधीजी पर बिगड़ते थे - "म्लेंच्छो को सर पर चढ़ाकर आर्यभूमि को, हिन्दुत्व को अपमानित किया जा रहा है।"[32] चिकवों की बस्ती में साई समझाता था "इस्लाम खतरे में है।|··[33] परेशानी में सतार बस्ती की तरफ लौटा गया। सलमा से मिलने की बात थी। तो वह नसीबन के घर पहुँच गया। जिस बेबाकी से नसीबन ने बच्चन का नाम लिया था वही सुनकर सतार को अचम्भा हुआ था। यासीन और सलमा का कोई मामला नहीं है। असल में बात तो यह है कि सतार को मकसूद के रंग ही अजीब लगे हैं। रो-रोकर सलमा ने बताया है कि शाम होते ही मकसूद औरतों की तरह सजता है। यासीन और मकसूद को अपने गिलास से शराब पिलाता है। यह सब देखकर सलमा खून के

आँसू रोती है। यह सब बर्दाश्त करती ही नहीं। सलमा शरम के मारे रोतो रोती सो जाती है।

सतार ने आगे कहा है कि "हाँ। भारत वर्ष हिन्दू राष्ट्र है। इस आर्य देश के टुकड़े हो, यह....।"[34] मुसलमानों को मारने के लिए हिन्दुओं की बड़ी तैयारियाँ थी। फिर यासीन भी तो मुसलमानों में तैयारियाँ करवाता है। हर तरफ एक ही शोर था - ऐसा शोर, जिसमें कोई भी आवाज पहचानी नहीं जा रही थी। पूरी बस्ती में एक खामोश शोर छाया हुआ था कि जिसमें असमंजस आशंकाओं का संदेह था। लड़ाई की खबरों में सभी भी दिलचस्पी थे।

आज़ाद हिन्द फौज बड़ी गरमा-गरमी पैदा कर रहे थे। गलियों में लड़के का एक ही शोर सुनाई देता है - "तुम मुझे खून दो। मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"[35] अंग्रेजों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है, हिन्दुओं का ही राज होगा। "हिन्दू और अंग्रेज दोनों दगा देंगे हमे।"[36] आखिर साई ने ही बीच बचाव किया था। ओठ कट गया था और टाँग से खून बह रहा था। इस झगड़े से बस्ती में सन्नाटा छाया था। साई ने उसी रात सतार को मस्जिद की कोठरी से निकलवा दिया था। खुशी की तो बात यह है मकसूद की पिटाई भी उसने कर दी थी। अँधेरे में नसीबन आयी उसने कहा कि "क्या बात हो गई थी"[37] उसने एक जबाव दिया बहुत चोट आई है। नसीबन ने सतार को कहा, "मेरे घर चले चलो, और इन झगड़े टंटों में पड़ना बन्द करो, समझे मेरे घर रहो और काम-धाम को कोई सिलसिला ढूँढो।"[38]

शहर में आजाद हिन्द फौज के जवानों की गिरफ्तारी की खबर गर्म थी। ढिल्लन, सहगल का मुकदमा लाल किले में शुरू हुआ था, तो शहर जागृत हो गया था....।

आज़ाद हिन्द फौज के जवानों के घरवालों के लिए कपड़े, चन्दा इकट्ठा कर दिया। नान बाई ने पूरी खबर दी "मजाक नहीं था उन लोगों को देश निकाल देना। वे ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज को देश से निकालते, वे देश के बाहर फिर आजाद हिन्द फौज बनाते - वहाँ से पकड़े जाते तो दस दिन गायब - पता लगता अमरीका पहुँच गए वहाँ फिर वही आजाद हिन्द फौज।"[39]

एक दिन खबर भी मिली की इलाहाबाद में हिन्दू मुसलमानों का दंगा हो गया है। तीन आदमी मारे गये हैं। शहर की दीवारों पर एक ही पर्चा जरूर चिपका हुआ था - "लेके रहेंगे पाकस्तान "पाकिस्तान जिन्दाबाद"।[40] संघवालों ने बड़ी समझदारी का कदम उठाया है। हिन्दू जाति को कोई परास्त नहीं कर सकता····कलियुग में ही संघ शक्ति है ऐसी भाषा में ठाकुर साहब बोल रहे थे। हिन्दुत्व की गरिमा और महिमा का सोया हुआ इतिहास फिर से जाग उठा। भारतीय राष्ट्र युगों की निद्रा से जाग रहा है। अपनी संस्कृति और अतीत को गरिमा के साथ रक्षा के बंधे हैं। "हम वीरों की संतान है।|···हम शिवाजी महाराज, प्रताप और लक्ष्मीबाई की संतान हैं···वीरता में शक्ति है तथा शक्ति में है प्रभुता का स्त्रोत। वीरभोग्या वसुन्धरा····और वीर वही है जो हिन्दू है।"[41] चारों ही तरफ उत्तेजना व्याप्त थी। खून में गर्मी आ गयी थी। मुसलमानों में मुर्दनी छाई हुई थी। चारों तरफ धुप्प अंधेरा ही अंधेरा था। कुछ देर बाद एक धब्बा नजर आया। वह धब्बा बहुत अहिस्ता-अहिस्ता सरक रहा था।

आजाद हिन्द फौज का मुकदमा निपटा तो दोनों जातियों में अपने हिन्दू और मुसलमानों का अहसास बढ़ता ही जा रहा था। हिन्दू शायद अपने को एकाएक ज्यादा हिन्दू समझते थे, और मुसलमान अपने को ज्यादा मुसलमान। चिकवों की बस्ती में साई का दबदबा और बढ़ता गया है। मकसूद और यासीन बहुत व्यस्त और परेशान है। सोलह अगस्त को "प्रोजेस्ट डे" मनाने का एलान कायदे आजम ने किया है।

सोलह अगस्त सन छियालिस शहर में मुसलमानों के काले झण्डे लेकर जुलूस निकाला ···महात्मा गांधी कलकत्ता न रूककर नोआखाली पहुंचे, हिन्दुओं को संतोष नहीं हुआ।···हिन्दुओं ने बिहार में बदला लिया तो खबरे और गर्म हुई। शहर के मुसलमान अन्दर ही अन्दर खुश हो रहे थे। सिर फिरों ने तो नासमझी में यहाँ तक एलान कर दिया, "अब बन गया हमारा पाकिस्तान। हिन्दु जाएँ अपने हिन्दुस्थान में। इमली के उत्तर में है हिन्दुस्थान और इधर है पाकिस्तान।"[42] आखिर कायदे आजम की जीत हुई।

सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था। गरीबी, अपमान, भूख और बेबशी में भी वे हारे नहीं थे, पर नफरत की आग शंकापूर्ण भय का धुआँ वे बर्दाश्त नहीं कर सकते। गरीबों को कोई पाकिस्तान नहीं ले गया था····। पाकिस्तान बनने की खुशी में मौलवी साहब एक दिन की छुट्टी बच्चों को दी थी। बच्चे शोर मचाते हुए इधर-उधर दौड भाग रहे थे। और मकसूद ने उन्हें एक नारा दिया - "पाकिस्तान जिन्दाबाद । कायदे आजम ····जिन्दाबाद।"

सन 1962 का दौर आने के बाद मुसाफिर जिस बस्ती को ओर लौट पड़े थे ये वही मुसाफिर थे जो अमीर बनने के सपने लेकर पाकिस्तान की ओर बढ़ते जा रहे थे। मगर वे पाकिस्तान पहुँच नहीं सके।

नसीबन सोचती रहती है क्या सह वैसी ही बेफिक्री और मस्ती की जिन्दगी होगी ? क्या गरीबी भी वैसी ही रहेगी ? एक और जिन्दगी आती भी है तो क्या होगी भी, तो क्या ? नसीबन की आँखों में चमक भर गयी और उसका बदन खुशी से थरथराने लगता है। सारी पहचाने उभर आती हैं "उन्हीं गये हुए और बिखर गये घरानों के बच्चे अब मजदूरी करने के लिए फिर लौटे थे···और अपने पुराने घरों की जगह खोज रहे थे···किसीने उसको बताया कि, "उधर अपने घर हैं।" [43]

नसीबन खुशी से रो पड़ी थी - वे सब बच्चे बशीर, बाकर, रमजानी धत्ते वगैरह जवान हो-होकर लौटे थे। नसीबन उन्हें अपने साथ ले गई थी···उन निशानों के पास जो अब भी बाकी थे····"यही तेरे अब्बा का घर था···बशीर यही बैठकर वह चमड़ा कमाया करता था, और बाकर बेटे···वह देख रहा है न···उसी के नीचे जो टूटी हुई दीवार है···वह तेरा घर था····और वो घर और वह ढहा हुआ चबुतरा रमाजानी के चाचा का है।" [44]

"लौटे हुए मुसाफिर" समस्या को चित्रित करनेवाला उपन्यास है। हिन्दुस्तान का बँटवारा या आजादी के वक्त और आजादी के बाद का वर्णन है। सामान्य लोगों

का शोषण कैसा होता है इसका भी वर्णन है। हिन्दू और मुसलमान लोगों का तनाव या नफरत की आग ये सभी इस उपन्यास में दिखाई देते हैं।

4· **तीसरा आदमी**

पति-पत्नी के संबंधो से लेकर लिखा गया यह कमलेश्वरजी का बहुत महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। उपन्यास की विशेषता यह है कि पति-पत्नी के बीच किसी "तीसरे आदमी" के आने की प्रचलित कहानी है। लेखक ने सामाजिक और आर्थिक आयाम प्रदान किया है। जिसके जीवन तत्व हो जाता है हमेशा स्त्री-पुरुष के बीच तीसरा आदमी आता ही रहता है। मध्यवर्गीय परिवारों के आर्थिक संस्कारों, असमर्थताओं का बड़ा ही सशक्त चित्रण कमलेश्वरजीने किया है। इस उपन्यास में तीसरे आदमी के रूप को उपलब्ध किया है।

उपन्यास में अनेक विवरण, वर्णन, चित्रण और संवाद हैं। उपन्यास को प्रथम पुरुष "मैं" की शैली में लिया गया है, जिसकी कुछ अपनी सीमाएँ होती हैं, वही सीमाएँ इस उपन्यास को एक प्रकार की विशिष्टता प्रदान करती है। इस विशेष स्थिति के कारण "मैं" के मन का संदेह और आंतरिक द्वंद, उसके भीतर के घृणा और द्वेष के भाव बड़े ही तीखे रूप से पाठक के सामने आते हैं, पूरा उपन्यास अत्यन्त विश्वसनीय एवं यथार्थ शैली का उपन्यास बना है।

"तीसरा आदमी" उपन्यास में जीवन का यथार्थ वर्तमान आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों के आधार हैं। मध्यवर्गीय व्यक्ति चेतना के परिवर्तित रूप को उद्घाटित करता है। कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में छोटी छोटी स्थितियों के द्वारा मध्यवर्गीय जीवन की विषमताओं को सशक्त बनाने की अभिव्यक्ति प्रदान की है।

"तीसरा आदमी" के परिवार के साथ ही नहीं है आपितु आज के सभी प्रायः निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों की यही स्थिति है। मध्य और निम्न वर्ग के संघर्ष को अत्यन्त सार्थक रूप में चित्रीत किया है। जहाँ परिवार में स्नेह और आत्मीयता उत्पन्न करती है। वहीं दूसरी ओर कटुता भी भर देती है। "तीसरा

आदमी" उपन्यास आकार में छोटा होते हुए भी गुणधर्मी स्वभाव का संस्पर्श प्रतीत होता है। "तीसरा आदमी" में कमलेश्वरजी की भाषा इतनी अधिक प्रभावशाली एवं समर्थ है जो कि कम से कम शब्दों को समूची स्थिति को व्यक्त करती है और उपन्यास की मूल संवेदना को भी प्रकट कर देती है।

सांकेतिक अभिव्यक्ति "तीसरा आदमी" इस उपन्यास की विशेषता है। शहरी जिन्दगी की एक जुड़ी हुई कड़ी के रूप में प्रकट हुआ है। इस उपन्यास में मैं प्रमुख पात्र है। चित्रा और सुमन्त ये भी पात्र महत्त्वपूर्ण है। मैं और चित्रा दोनों पति-पत्नी हैं सुमन्त मैं का दूर दराज का भाई है। शादी के पहले दिन से ही सुमन्त, मैं और चित्रा के बीच आता है और शक की दीवार खड़ी करता है। सुमन्त देखने को खुबसूरत ही था। चित्रा भी उसकी खुबसूरती से प्रभावित हो गयी। शादी के बाद कुछ ही दिनों में मैं और चित्रा दिल्ली जाते हैं - सुमन्त के पास। चित्रा सुमन्त की ओर खींच जाती है। मानसिक तनाव या संघर्ष इसमें प्रस्तुत होता है। घर में हमेशा एक तीसरी छाया मँडराती रहती है। पति-पत्नी के बीच जब भी कोई "तीसरा" आदमी आ जाता है। तब भी उनके रिश्ते टूट जाते हैं।

मैं अच्छी नोकरी की तलाश करता है। दिल्ली में सुमन्त का मकान छोटा ही था। फिर भी ये तीनों कैसे कैसे तो उसमें जिन्दगी गुजारने लगे थे। सुमन्त दिल्ली के प्रेस में काम करता था। सुमन्त ने चित्रा को प्रूफ रीडिंग का काम भी सिखाया है। मैं जब घर से बाहर रहता है तो सिर्फ चित्रा और सुमन्त दोनों ही मकान में रहते हैं। सुमन्त चित्रा की ओर आकर्षित होता है। चित्रा भी सुमन्त की ओर आकर्षित है। "व्यक्ति के चेहरे से एक प्यार भरा तेज फूटता है...आँखों मे एक आभा उतर आती है चारो ओर सब कुछ संतुलित और सुन्दर दिखाई देने लगता है। बेकार चीजों में भी अर्थ भर जाते हैं...।"[45] शादी के कुछ दिन बाद ही पत्नी के बारे में उनको शक आता ही रहता है। रोज मैं गंगातर के जीवन की डाक्यूमेंटरी के तीन-चार लोगों के साथ बाहर चला जाता है।

जिन सात दिनों में चित्रा और सुमन्त के बीच तमाम सारी बातों को घटित होना यह उपन्यास की शुरुवात है। सुमन्त के साथ एक ही कमरे में रहना, उठना, बैठना और सोना···यह अच्छा नहीं है। चित्रा को साथ ले जाना भी संभव नहीं है। मन में जाना या नहीं जाना इसको इसको घेर लिया था। मन के मुख्य डर को उन दोनों ही स्पष्ट नहीं किया। "यह जगह वैसे बहुत सेफ है। गली में हर वक्त कोई न कोई आता जाता रहता है। रात में भी लोग बाहर लेटते हैं, डर तो मुझे बिल्कुल नहीं लगेगा······।"[46]

उस दिन बहुत गहराई का अनुभव किया था। सचमुच एक तीसरा आदमी हमारे बीच उपस्थित है - हर बात उसी पर ढलती है। हर संशय का वह इशारा करता है। ऐसे वे दोनों मानते ही रहते हैं। लेकिन इसका नतीजा पति-पत्नी के संबंधों में जहर घोल देता है। पति-पत्नी का दूसरा आधार यह है - "इस सम्बन्ध में एक नैसर्गिक कोमल पशुता है। यह सम्बन्ध बुध्दि से उतना संतुलित नहीं होता जितना कि हृदय से, और इसलिए तर्क की उतनी गुंजाईश इसमें नहीं है। इस सम्बन्ध के बारे में तर्क हो ही नहीं सकता। किसी भी तर्क के सहारे इसे चलाया ही नहीं जा सकता···।"[47]

प्रेस के काम के सिलसिले में मैं क्रो आगरा जाना पड़ता है तो सुमन्त उसकी अनुपस्थिति को निश्चितता महसूस करने एक बनावटी संतुष्टि का ब्यौरा उपस्थित किया है। चित्रा और सुमन्त दोनों बिलकुल आजाद हो गये थे। वे दोनों एक दूसरे के करीब आ गये थे। दिन-ब-दिन चित्रा का रवैया बदलता गया। जब सुमन्त डयूटी से लौटा तो चित्रा घर पर नहीं थी।····"कमजोर क्षणों को कोई नहीं जानता। पता नहीं कब, कहाँ और किसीके मन में कमजोरी पैदा हो जाए।"[48]

सातवें दिन जब चित्रा का पति आया तो सुमन्त नहीं था। चित्रा कपड़ो पर इस्त्री कर रही थी। कुछ देर बेहद अर्थभरी खामोशी छाई रही थी। अपनत्व भरी बातों के बीच चित्रा मुक्त हो गई थी। वैवाहिक अपेक्षाओं की पूर्ति में संलग्न व्यक्ति कितना भद्दा और बेहूदा लगता है।

"और अब उसका अर्थ क्या रह गया है। यदि वह क्षण वास्तविक भी था। उसका प्राप्य ? कुछ भी नही। ऐसे क्षणों की स्मृति को जोड़ कर रखूं तो भी कुछ नहीं होता····और आज तो इस सबका मतलब भी नहीं रह गया है। शायद इसका मतलब तब होता है जब "विवाह का भी कोई अर्थ होता। जिन्दगी के संदर्भ में जब इस सामाजिक संस्था का ही कोई अर्थ होता नहीं, तो उन क्षणोंकी आत्मीयता ही मानी है, प्रवंचना है।"[49]

आगे चलकर चित्रा सुमन्त से गर्भवती भी रही। मैं जानता था कि सुमन्त का खून चित्रा के बदन में बह रहा है। मगर इस मामले में उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। चित्रा को बिना बताये भोपाल में चला गया क्योंकि दिल का बोझ कम या हलका होकर मन को सुख शांति मिल जायेगी। "तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही है। पता नहीं क्या अंटशंट सोच लेते हो।····खैर ठीक है।"[50]

दिल्ली में चित्रा और सुमन्त दोनों ही रहने लगते थे। इस बीच मैं ने चित्रा को एक चिठ्ठी भी नहीं लिखी। कुछ दिनों बाद मैं के नाम एक चिठ्ठी चित्रा के पिताजी ने भेज दी थी। और पुत्र होने की सूचना भी दी थी। अचानक आकाशवाणी की ओर से मैं को जल्द ही दिल्ली बुलाया गया। दिल्ली में कुछ दिन रहने के बाद मैं का शक कम होता जा रहा था। दिल्ली में मैं सुमन्त के बदले अपने दोस्त के मकान में रहने लगे थे। सामाजिक कठिनाइयाँ भी थी। दोनों एक नयी जिन्दगी की शुरुवात करना चाहते थे। चित्रा मेरी पत्नी है। उसको छोड़कर चले जाना यह अच्छा नहीं है।

एक दिन बेहद कमजोर क्षणों में मैं ने चित्रा को लिखा था, "जो कुछ भी हुआ है, उसे भूल जाओ और बच्चे को लेकर यहाँ चली आओ।"[51] अपमान और दारुण की जिस आग में मैं जलता हूँ अब मेरे मन में प्रतिशोध की घृणा है और कुछ नहीं।

"शायद हम फिर से अपनी जिन्दगी शुरू कर सकें। नहीं जानता, इस बीच तुमने क्या क्या सोचा है। पर मैं बहुत साफ मन में इतना ही कह सकता

हूँ कि तुम्हारे चले आने से सब ठीक हो जाएगा। मेरे मन में अब कहीं भी किसी तरह की कुण्ठा नहीं है। शायद इसलिए भी कि मैं उस अबोध को सिवा प्यार के और कुछ नहीं कर सकता। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में निरन्तर करूँगा।"[52]

कुछ दिनों बाद उसकी तार मिली कि वह आ रही है जब वह स्टेशन पर उसे लेने गया तो शक आया की सुमन्त भी आया हो, पर ऐसा कुछ नहीं था। चित्रा ने समझदारी का काम किया था। बच्चे को देखकर सारा मलाल धुल गया। बहुत ही सुन्दर था - बहुत प्यारा था। चित्रा ने उनको कह दिया कि "देख लो अपनी अमानत।"[53] मित्र ने चित्रा का स्वागत खुले दिल से किया था और बच्चे को देखकर वह भी बहुत खुश था। बच्चा खूब हँस मुख था। बच्चे के जन्म के बाद उसमें उद्दाम खिंचाव नहीं रह गया था, उसकी जगह अद्‌भुत सा सौन्दर्य फूटा था, उसमें शांत मासूम है। पूरे व्यक्तित्व में अजीब सी गरिमा व्याप्त थी।

चित्रा ने ही कहा था, "तु तो नाराज होकर भोपाल जा बैठे, यह भी नही सोचा कि मेरा क्या होगा ?····क्यों ?·····घर पर क्या क्या नहीं सुनना पड़ा मुझे।|···लेकिन इस गुड्डू की खातिर सब बरदाश्त कर लिया। अगर यह पेट में न होता तो मैं सचमुच कुछ कर लेती अपने लिए····"[54]

गुड्डू कुछ दिनों बाद बीमार पड़ा था। वह बीमारी बढ़ती ही जा रही थी। सभी चिंता से भयभीत हैं। गुड्डू को डिप्थीरिया की बीमारी लग गयी है। इलाज के लिए उसको हास्पिटल में रखा गया मगर यह सारा काम स्वयं सुमन्त ने ही किया क्योंकि मैं कि दिल्ली में और किसीसे पहचान नहीं थी। सुमन्त बार बार डाक्टर से सलाह लेता रहता था। मैं सिर्फ हाथ पर हाथ रख कर चुपचाप बैठता है। इन सभी बातों को देखकर मैं के दिल में शक और भी पक्का हो जाता है।

हॉस्पीटल से लौटने के बाद चित्रा और मैं बिल्कुल खुशी के साथ रहने लगे। चित्रा और मैं दोनों करीब आते हैं। चित्रा फिर से गर्भवती रही। चित्रा ने यह कहा था कि, "हर बच्चा दो हाथ लेकर आता है, और वे दो हाथ दस को सहारा दे सकते हैं····मेरे लिए कोई भी बच्चा कभी भी अनचाहा नहीं होगा···।"

"अगर जिन्दगी मेरे साथ जिओगी तो जिन्दगी का दर्शन भी मेरे साथ ही बनाना पड़ेगा....।"[55]

"सुमन्त ने भी एक तिीसरी एक कमरा लिया था। जिधर चित्रा ने एक लड़की को जन्म दिया। प्रसव का सारा इन्तजाम खुद सुमन्त ने ही किया था। चित्रा ने दिल्ली के एक स्कूल में नोकरी स्वीकार कर ली। स्कूल में किसी लीव वेकेन्सी पर उसकी नियुक्ति की गयी थी। दूसरे ही साल नोकरी पक्की हो गयी। में का अब दिल्ली में रहना मुमकिन नहीं है क्योंकि उसकी ट्रान्सफर पटना से करा दिया है। दिल्ली छोडने के लिए चित्रा तैयार नहीं है और आखिर में ने दिल्ली छोड ही दी और वह पटना चला आया।

कुछ दिनों के बाद पता चलता है कि सुमन्त ने किसी होटल के कमरे में आत्महत्या कर ली थी। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण - शायद वह में। पुलिस ने चित्रा को कितना परेशान किया होगा कुछ पता नहीं। शायद उसके दिल में पुरानी भावनाएँ फिर उभरें ? अब बाकी ही क्या बचा है ? बच्चे। में जानता हूँ चित्रा उन्हें नही देगी। में की मजबूरी यही थी कि चैन से बेठने नहीं देती। उस छाया ने उसे मजबूर कर रखा है। "हर वक्त एक तीसरी छाया मंडराती रहती है....ऐसा लगता है कि हर, "मुझ और हर "चित्रा" के बीच वह छाया खड़ी है।...जब भी कोई भी, किसी भी चित्रा की आँखों में झाँकने की कोशिश करता हे तो लगता है कि जैसे दो नहीं, चार आँखे झाँक रही है...चार बाहें उस चित्रा को कस रही हैं।..चार होंठ उसे प्यार कर रहें हैं....।"[56]

5· **समुद्र में खोया हुआ आदमी**

"समुद्र में खोया हुआ आदमी" एक शहर में मध्यवर्गीय परिवार की कथा है। यह कथा की बड़ी विशेषता यह है कि यह एक प्रतिकात्मक अच्छा उपन्यास है। जीवन संघर्ष का चित्रण बड़े पैमाने से किया है। इस उपन्यास में परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने अपने ढंग से संघर्ष में जुट जाता है। मध्यवर्गीय संस्कारों, जड़ताओं और कुण्ठाओं का चित्रण किया गया है। यह उपन्यास अधिक व्यापक और विस्तृत है।

इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं श्यामलाल अन्य पात्र हैं बटिन, रम्मी, तारा, हरबंस, समीरा नामिता आदि। यथार्थता यह सफल उपन्यास है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" एक शहर में निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कथा है। यह कथा उस घुटते परेशान होते और टूटकर बिखरते परिवार का चित्र प्रस्तुत करने और उसके माध्यम से वर्तमान समाज में बदलते हुए व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधो को प्रत्यक्ष रूप में रखने का प्रयास करती है। आज का मध्यवर्गीय व्यक्ति किस प्रकार अपनी अर्थवत्ता खोकर आधुनिक सभ्यता की भीड़ में एक महत्तहीन अंश में रूपान्तरित होता जा रहा है।"

श्यामलाल जिन्दगी का नया सपना लेकर दिल्ली चले आते हैं। उन्होंने एक ट्रान्सपोर्ट कंपनी में एक क्लर्क की नौकरी स्वीकार कर ली थी। उनको इस बात का पूरा यकीन है कि वे एक न एक दिन उसी कंपनी में मैनेजर बन जायेंगे। दिल्ली को जिस सपने से आते है वह उनका सपना पूरा नहीं हो पाता।

आखिर एक दिन उन पर भयानक संकट आता है। उन्हें कंपनी की नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। उनका परिवार गरीब हालातों से गुजर रहा है। श्यामलाल अनेक तरह से काम ढूँढते हैं मगर उन्हें कामयाबी मिल नहीं पाती। वे जिन्दगी से बेसहारा हैं। वे परिवार की परवरिश करने में असमर्थ हैं। अपनी बेटियों, नौकरियाँ करे उनको यह पसन्द नहीं है। जिन्दगी से वे मजबूर हैं। वे पूरी तरह से टूटे हैं। मगर वे जिंदगी से हारते नहीं। श्यामलाल अपनी हार को जीतने की कोशिश करते रहते हैं। उनकी आशाओं का सबसे प्रमुख बिंदू है बीरन।

बीरन को वे पूरी अरमानों में देखना चाहते हैं। आपका बेटा जब पढ़ लिखकर नौकरी पा लेगा तो परिवारकी समस्याएँ खत्म हो जायेगी। ऐसी उम्मीद रखते हैं पर यह उम्मीद पूरी नही हो पाती। हालात ने उन्हें मजबूर बनाया है कि वे कहीं के भी नही रह जाते। बेबसी जिन्दगी से उबर जाएंगे। श्यामलाल आशा से जिन्दगी का सामना करते जी रहे हैं। आर्थिक रूप से जर्जर हैं।

बीरन को हमेशा अपने बाबूजी की मायूसी और बेबसी सताती रहती है। वह परिवार की हालत देखकर नाराज हो जाता है। उन्होंने एक जिन्दगी का

नया रास्ता ढूँढा है। वे नौ सेना में चुने जाते हैं। ट्रेनिंग के सिलसिले में दिल्ली से दूर चला जाता है। बीरन एक बड़ा ही समझदार युवक है। वह घर की हालत को भलि भाँति से जान लेता है।

बीरन को यह भी मालूम है कि उसकी पढ़ाई के लिए उसके माँ-बाप ने कितने कष्ट उठा कर उनको पढ़ाने का काम किया है। नौकरी से दूर चलने के बाद माँ-बाप खुश होते हैं। "हाँ···हां···" बीरन सब बातें सबको समझाता रहा था। नेवी की नौकरी की बातें वह बढ़ा-चढ़ाकर करता रहा था। उसकी आँखों में पूरी दुनिया तैर रही थी।"[57]

बीरन का व्यक्तित्व पूरे घर पर छा गया था। समुद्र पार कर उसके खत आते हैं तो श्यामलाल बड़े सहारे से जी उठते हैं। श्यामलाल की बीवी रम्मी। वह हर बात को स्वीकारती चलती है। परिस्थितियों का सामना करते करते वह जिन्दगी से जीती है। वह एक साधारण औरत है। अपनी बेटियाँ समीरा और तारा के अरमानों को एक माँ की हैसियत से देखना भी चाहती है। बीरन को आदर्श रूप में देखना चाहती है। बीरन नौकरी से माँ-बाप चिंतीत हैं।

"बीरन के खतों को वह तब पढ़ते। जब सब लोगों को जमा कर लेते··· "जहाज ऐसे डगमगाता है जैसे भूचाल आया हो। शुरू शुरू में बड़ी तकलीफ होती थी। अब आदत पड़ गई है। देशों और शहरों से दूर हमारी यह निराली दुनिया है···ट्रेनिंग बहुत सख्त है, पर आराम भी बहुत है। कल हमारा जहान स्वेज पार करेगा। आज पार करने की इजाजत नहीं मिली है। लेकिन हम उतरकर कहीं नहीं जा सकते। बंदरगाहों पर बाजार अच्छे नहीं हैं····" बीरन अपनी हैसियत का सामना करता रहता है और जिन्दगी को जी रहा है।[58]

नमता बीरन को बेहद प्यार करती है। यह सब चुपचाप होता ही रहता है। वह बीरन से प्यारकरती है इसका किसीसे भी मालूम नहीं है। उसके इंतजार करते करते जिन्दगी गुजरती रहती है। बीरन एक साहसी युवक है। तारा और समीरा माँ-बाप के प्रति ज्यादा प्यार करती है। समीरा हमेशा ही असमंजस

में ही पड़ी रहती है। बीरन ने तारा को एक कटू बात बतायी थी, तारा को झाड़ दिया था - "अब यह सब इस घर में नही चलेगा। सात बजे तक बाहर रहने की जरूरत नहीं है। मैं समझता था कि तुम खुद सोचोगी···।"[59] तारा का हरबंस से प्यार इस बात को बीरन अच्छी नहीं मानता। तारा का यह प्यार बढ़ता ही जा रहा था। एक दिन यह बात तारा ने कह ही दी वह हरबंस से शादी करना चाहती है।

रम्मी ने श्यामलाल से पूछा तो उनके पिताजी ने साफ इन्कार कर दिया। तारा हरबंस के साथ शादी करके घर से निकल जाती है। विवाह के बाद सारी मुश्किलें खत्म हो जाती है ऐसा उनको लगता है। हरबंस जमाने के साथ कदम बढ़ाने वाला युवक है। नये जमाने के साथ आगे बढ़कर कदम मिलाकर चलता रहता है। दुनिया की नजरों में वह एक व्यावहारिक आदमी है। बीरन का खत दिलाने के लिए नमता आती है, तो वह कहती है - "यह गली में पड़ा हुआ था···।"[60] इस खत में लिखा था कि बीरन का न्यूजीलेण्ड जाने का प्रोग्राम था।

कमाण्डर की इजाजत देने से बीरन अभियान पर जा सकता है। उसका जहाज न्यूजीलेण्ड से दक्षिण अमरीका जाने वाला था। तीन महीने बाद उसके लौटने की तारीख थी। वापसी पर बीरन को अपना जहाज पर्ल बन्दरगाह पर पकड़ना था। "···कॉलेज में पढ़ते समय उसने बहुत से सपने देखे थे।···भूगोल की किताबों और एटलसों को वह घण्टो पलटा करता था और कल्पना किया करता था कि भविष्य में वह किन किन प्रदेशों में जाएगा। नक्शों पर समुद्री रास्तों की लकीरों के सहारे वह पूरी दुनिया घूमकर लौट आता था।"[61] चारों तरफ हजारो मील विस्तार में फैले समुद्र की मनहूस खामोशी से घबरा उठता है। चारों तरफ समुद्र।··समुद्र और समुद्र ही था।

बन्दरगाह में और भी जहाज थे। समुद्र पर धुंध छाई हुई थी। जहाज जब चलता है तब सैकड़ो लोग उन्हें बिदाई देते हैं। चारों तरफ पानी ही पानी था। बंदरगाह छोड़ने से अजीब-सी-लापरवाही उदासी है। नीचे अथाह समुद्र है उपर आसमान है। बीरन को समझ गया था कि अभियान दल का सदस्य श्रेष्ठ

है। बीरन बहुत उद्विग्न था। उसके लिए आगे बढ़ना नामुमकिन हो गया है।" जहाज पर पड़े बीरन का मन ऊब रहा था। खाडी के कगारों पर लोगों ने बिदाई दी थी। बीरन का जहाज चल पड़ा था।

"जहाज लौटते हुए सब हिम सागर के बीच से गुजरा तब हजारों श्वेत सील और बातेलों की तरह बैठे पेंग्विन पक्षी उन्हें चुपचाप देख रहे थे। बीरन यह दृश्य तब तक देखता रहा, जब तक वे आँख से ओझल नहीं हो गए। बर्फ में उगे हुए पक्षियों को वह भुला नहीं पा रहा था। उसे तब एक और ध्रुव प्रदेश भी दिखाई देता - जहाँ उसके घरवाले छूटे हुए थे।..."उसी ध्रुव प्रदेश में सलाखों वाली एक खिड़की भी उभर आती थी।"[62]

बीरन को पर्थ पहुँचना था। उसे घर बेतरह याद आता है। वह बुरी तरह थका हुआ है। भारतीय जहाज के लौटने की प्रतिक्षा कर रहा था। उसको यह मालूम था कि मैत्री यात्रा पूरी करने के बाद उसका जहाज पर्थ लौटनेवाला था। जिस दिन पर्थ से बीरन का खत घर पहुँचा तो उसी दिन उसकी राह देखी जाने लगी। तारा शादी करके चली गयी तो समीरा अकेली रह गयी है। माँ को दामाद से कुछ लेन देन अच्छा नहीं लगता। तारा गई सारा घर सूना हो गया।

श्यामलाल की हालत खस्ता थी। वे बहुत परेशान थे। "ईमान से कहता हूँ। मालिक से पूछ लो, मैंने क्या दिया है...इसके ऊपर कुछ मत दो।...सामान तो देख लो।" कहते वह उन्हें फुसलाकर भीतर ले आए। कबाडियों ने सामान देखा और मुँह बिदका दिया - "हमारे लायक नहीं है। यह ऊँचे लोगों के काम का है...।"[63]

श्यामलाल बुरी तरह फँस गये थे। घर में रम्मी दबे स्वर से कोंचती रहती है। समीरा की पढ़ाई बन्द हो गयी। उनकी परछाइयाँ उलझी रहती है। घर में सन्नाटा छाया हुआ था। समीरा का कालेज जब से छूटा था वह बेहद चुपचाप रही थी। सब का मन ही मन हुआ था। घर में जवान लड़की है किसको नजर कैसे बदल जाएगी, इसका ख्याला आ रहा है।

"यही तो वह नहीं समझता···चार दिन में यहाँ तो बहुत फर्क पड़ता है। यह शहर ऐसा है कि बिना पैसे के यहाँ कोई पहचानता ही नहीं। पैसा पास है तो दुनिया अपनी है।। नहीं तो कोई साला ···" [64]

रम्मी के सामने एक विशालकाय तसवीर खड़ी हो गयी थी। बीरन के आने के दिन इंतजार करने से बीत रहे थे। लिखी हुई तारीख को भी बीरन नहीं आ सका। सबका मन उतर गया। रम्मी ने हल्के गुस्से से कहा···"इस लड़के की हमे यही बात पसन्द नहीं है।।···लिखेगा कुछ।। करेगा कुछ···।" [65] घर अस्तव्यस्त होने लगा। इन्तजार करते समय ही एक आदमी श्यामलाल के घर में आये उनका नाम चरनजीतसिंह है। वह बीरन का दोस्त है। वह जालंधर जा रहा तो मिलकर जाना उसे अच्छा लगता है। "वह। बात असल में यह है कि"···चरनजीत ने बहुत सँभलकर सधे हुए स्वर में सूचना दी - "वीरेन्द्रनाथ कहीं खो गया है।···।" [66] सभी को शक हो जाता है एक्सीडेंट तो न हो गया हो। श्यामलाल ने दिल टूटने से सँभलते हुए कहा कि वह सिंगापुर में रह गया हो।

चरनजीत के चले जाने से घर में रोना शुरू हो गया था। श्यामलाल भी अपने आँसू रोक नहीं पा सकते थे। वे अपनी पत्नी को बार बार समझा रहे थे - "हौसला करो बीरन की माँ···समीरा इन्हें पानी दे।।···तू मत रो बेटी··· अपशकुन क्यों करती हो तुम लोग।।···।" [67]

श्यामलाल खुद समझाते भी वह फूट फूटकर रो पडते थे और कहते हैं कि "हे भगवान। क्या अब होगा। यह किस जनम का बदला लिया परमात्मा तूने।" [68] घर में भयंकर खामोशी छा गई थी। घर में मौत मँडरा रही थी। हरबंस की आँखों में पानी आ गया था। नमता समीरा के पास चुपचाप बैठी गयी थी। शोकमग्न से घर के लोग बैठे रहे थे। नमता को घर का नौकर बुलाने आता है। वह जाते ही घर के लोग अकेले ही रहते हैं।

समीरा माँ को उठाना चाहती है।। माँ बार बार एक ही सवाल का जिक्र करती रहती है।। "कहाँ खो गया बीरन···हम कहाँ से ढूँढकर लाएं बेटा···बीरन

बेटा···।"[69] घर के सभी लोग अजनबियों की तरह से रहते है। श्यामलाल तमाम कागजों को फाड़ते ही रहते हैं। हरबंस ने उनसे कहा यह आप क्या कर रहे हैं। क्या करना है इन कागजों को हरबंस। वह फिर रो पड़ते थे। "अब कों यह नाव लेनेवाला नहीं है।|···हे भगवान ····यही मर्जी थी तेरी····।"[70]

शाम होते ही दरवाजे में एक लिफाफा पड़ा रहता है। वह सरकारी खत बीरन के लापता होने की खबर दी गयी थी। हरबंस दिमाग से परेशान हो रहे थे। लोगों को देखकर उसका मन अजीब दर्द से उठने लगता है। उनके समझ में यह नहीं आता कि उन सब लोगों को कैसे समझाया जाए।

बीरन के सकुशल लौटने के लिए सभी घर में प्रार्थना करते हैं। रम्मी ने आंसू भरी आँखों से कहा था। "उसे मिठाई बहुत पसन्द थी····चुरा चुराकर चीनी खाता था। हे भगवान। आज से चीनी तुम्हारे अर्पण। मेरा बीरन जीता जागता लौट आए तब तुम्हारी पूजा करके चीनी छुऊंगी। मेरी सुनना ऐ प्रभो।"[71] पीपल के नीचे खड़े होकर श्यामलाल बीरन का इन्तजार करते रहे। सरकारी कामकाज जारी ही था मगर बीरन का पता ही नहीं चला है।

घर का आसरा टूटता जा रहा था। बेहद मजबूरी में जीने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। मृत्यु का जीते जी मरते जाना यही अनुभव था। सरकार ने बीरेन्द्रनाथ का अब मरा हुआ ही मान लिया था। घर का सारा वातावरण दुःख या हमदर्दी से भर गया था। ·····"आप लोगों की तकलीफ से मुझे भी बहुत दुःख हो रहा है।"[72] बीरन समुद्र में ही खो गया है। समीरा नर्स का काम करना चाहती है। सफेद वर्दी से मन को बडी शांति मिल जाती है उसकी तरह वह बदल जाने से कबूल है। नौसेना दफ्तर में बीरन के लापता फायलें भी लापता हो गई थी।

हरबंस ने बड़े दिल से एक चीज निकाल दी उसमें वर्दी और पेटी थी। और कुछ नये कपड़े थे। माँ और बहन के पैरों के नाप थे। नमता ने भी बीरन को कुछ खत लिखे थे उसने वह खत बहुत संभाल के रखकर अपने पास रखे

थे।

सबकी आँखे नम थीं। घर में सन्नाटा छाया गया था। उस सन्नाटे की सिसकियाँ आवाज तोड़ रही थी। "हाय मेरे बीरन···तू कहाँ खो गया मेरे बेटे।।····"[73] शाम को श्यामलाल अपनी फैक्टरी चले गये। समीरा अपने होस्टल चली गयी और माँ तारा के पास चली गयी। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा था। समुद्र की मनहूस खामोशी छायी हुई थी।

समीरा होस्टल चले जाने के बाद बार बार उनको एक सवाल सताता रहता है कि नमता ने उससे कभी बीरन के बारे में क्यों नहीं कहा। क्यों वह मन में चूप होकर बीरन से प्यार करती थी।····"और उनके सामने फैला था··· महासागर रात का समुद्र हिलोंरे ले रहा था। वह ज्यादा दूर तक नहीं देख पा रहे थे। जैसे गहरे पानी में नजर कैद हो जाती है। वेसा ही लग रहा था और वह सोच रहे थे कितनी तकलीफ हुई लोगी बीर को।···कितनी ऊब चूब में जान फँस गई होगी। कितनी घबराहट हुई होगी।·····पर मौत को मंजूर करना किसकी ताकत में है। क्या पता। वह घबराकर कहीं और चला गया हो।··वैसे ही जैसे वह खुद चले आये हैं।···और शायद किसी दिन घर लोट आए····पर अब लोअे भी आया तो क्या ? लहरों ने सबको कहां कहां फेंक दिया है····कोई एक लोट भी आया तो सब लोट आएंगे। इसका क्या पता ?"[74]

6· **आगामी अतीत**

कमलेश्वरजी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण यह उपन्यास है। यह उपन्यास धर्मयुग में धारावाहिक रूप में छपाया था। कमलेश्वरजी ने अपने इस उपन्यास में रोमैंटिकता को रोमांटिकता से ही तोड़ने की कोशिश की है। उनकी दृष्टि से चांदनी हिन्दी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। इस उपन्यास पर आधारित गुलजार के निर्देशन में "मौसम" शीर्षक फिल्म बनी है।

"आगामी अतीत" जब धर्मयुग में धारावाहिक रूप में छप गया तो पत्र लिखे गये उनमें दो पत्र ये हैं -

"आगामी अतीत" पढ़कर काफी निराशा हुई। एक बात मैं जानना चाहूँगा कि आपके सामने वह कौन-सी आर्थिक राजनीतिक सामाजिक या कोई अन्य परिस्थिति थी जिससे प्रेरित होकर अपने इस घटिया टाइप के उपन्यास की रचना कर डाली ?" [75]

अवतार काम्बो।, देहरादून - 1

"और यह जो आपका नया उपन्यास है इसे "किसी" से लिखवाया था ? बिलकुल किसी चालू हिन्दी फिल्म की कहानी लगती है। तुम्हें हो क्या गया है ?" [76]

शमा जैदी बम्बई

श्रीमती शमा जैदी तथा काम्बो को जो जवाब कमलेश्वर ने भिजवाये थे।, उनके मिले जुले अंश निम्नांकित हैं -

"अफसोस सिर्फ इस बात का है कि तुम जैसी जागरूक दोस्त ने भी बात को नहीं पकड़ा। मैंने निहायत फूहड ढंग से रोमांटिकता को रोमांटिकता से ही तोड़ने की कोशिश इस उपन्यास में की है और मैं जानता था कि इसे पढ़कर अच्छे-अच्छे गच्चा खायेंगे तुम यह तो देखो कि उपन्यास की "थीम" क्या है। पूँजीवादी समाज के स्पर्धामूलक परिवेश में तोड़कर जब आदमी अपने "वर्ग" को भूल कर दूसरी तरफ लाँघ जाता है और उस स्पर्धा से ऊब कर जब वह अपनों के लिए लौटता है।, तब तक उसकी क्या हालत हो चुकी होती है। इस उपन्यास के उपरी रोमँटिक खोल के भीतर जो कथ्य है वह है - इस पूँजीवादी व्यवस्था में स्पर्धा की मजबूरी।" [77]

"आगामी अतीत" कमलेश्वरजी का अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। गीतकार गुलजार ने इस पर "मौसम" फिल्म बनायी है। इस उपन्यास के अन्य पात्र कमलबोस चंदा।, चांदनी।, प्रशान्त ये प्रमुख पात्र हैं।

कमल बोस दवाइयों की दुनिया में तंग आकर आराम पाने के लिए दार्जिलिंग के एक होटल में ठहर जाते हैं। वे अपने ड्राइवर ध्यानसिंह को कलकत्ता भेज देते हैं। कमलबोस को पहले से ही होटल मैनेजर जानता था। क्योंकि कमल बोस दवाइयों

की कम्पनी का सेल्समैन था। इस होटल में कमल बोस ठहरे हुए हैं। उसी होटल में तमाम सारी दवाइयों के विग्यापन लगे हुए हैं। झुंझलाते हुए दवाइयों की फाइल्स बास्केट में डाल दी थी। कमल बोस राहत नहीं पा सकते हैं।

पुराना लोअर बाजार की तरफ से वह मुड जाते हैं। तब उन्हें वहाँ पर बहुत सी चीजें नज़र आती है। सामने से जब विद्यार्थी और लड़कियाँ गुजर जाती है। हल्की-सी उन्हें एक याद आती है छड़ियों की दुकान देखकर कुछ याद आती थी। उनकी अकेली माँ ही है। उनके पिताजी युध्द में मारे गये थे। माँ ने ही उनकी परवरिश की थी। वह उन्हें पढ़ाती है। मकान में वे रहते तो वह उनका अपना नहीं है। मामा की मेहरबानी की वजह से वह मकान उन्हें मिल पाया है।

कमलबोस का बचपन का एक दोस्त है - प्रशान्त। उन्हीं को वह भी पढ़ाता है। माँ ने ही उनकी पढाई का इन्तजाम किया था। डाक्टरी पढ़ने कमलबोस काफी दिलचस्पी रखते हैं। प्रशांत के कहने पर माँ "मारवाडी चेरिटेबुल ट्रस्ट" की मदद लेकर कमल बोस की डाक्टरी की पढाई का इंतजाम कर देती है। कमल बोस और प्रशान्त डाक्टरी पढ़ने के लिए कलकत्ता चले जाते हैं। डाक्टरी पढ़ने पर प्रशान्त आर्मी में चला जाता है।

प्रशान्त आर्मी चले जाने के बाद कमल बोस की जिन्दगी को एक नया रास्ता मिला था। दवाइयों की एक फैक्टरी मालिक बन गये थे। कुछ दिनों तक दोस्त की खोज खबर नहीं मिली थी। पता चलता है कि अखबारों से पर्वतारोही दल ने सफलता प्राप्त की है। पर्वतरोहियों के दल में प्रशान्त डाक्टर की हैसियत से शामिल था।

कमल बोस दार्जिलिंग के उसी होटल में ठहरे हुए हैं। बाहर जाकर दूरबीन से बहुत-सी चीजों को देखते रहते हैं। मगर मन की दुरबीन में उनहें कुछ और ही दिखाई दे रहा है। पच्चीस बरस पहले की वह याद - चंदा की। चंदा नामक एक लड़की से ब्याह करने का वादा कमलेश्वर ने किया था। एम·बी·बी·एस पास करने पर वे उससे ब्याह करनेवाले थे। फिर वादा करके चले जाने पर पच्चीस

बरस के बाद लौट आते हैं तो मन में सोचते रहते हैं···· चंदा ने अपना घर गृहस्थी बसा लिया होगा। उसने इंतजार किया होगा या नहीं मिलने पर वह पूछ लेगी कि···"अब क्यों आये हो ? जो कुछ कह गये थे उसका ध्यान पच्चीस बरस बाद आया है। "क्या तुमने चन्दा को भी और लड़कियों की तरह समझ रखा है। मैंने तो तुमसे कुछ नहीं माँगा था···तुम्ही अपने आप कह गये थे। आदमी के वादों पर भरोसा करना कितनी बड़ी गलती होती है, यह अब समझ पायी हूँ···"[78]

पच्चीस साल पहले की घटना में याद करते रहे हैं। एम·बी·बी·एस· की परीक्षा की तैयारी के लिए कमल बोस दार्जिलिंग चले जाते हैं। उन्होंने डाक्टरी पास करके घर आये तो उन्हें उनकी माँ नहीं देख पाती है। वह आने के पहले ही माँ की मौत हो जाती है। माँ की मौत के बाद उनका दार्जिलिंग से ताल्लुक टूट ही गया था।

कमल बोस दार्जिलिंग में ही ठरहे हुए हैं। किताब पढ़ते पढ़ते वह सीढ़ियों से उतरते हैं तो अचानक उनका पैर फिसल जाता है और वे नीचे गिर जाते हैं। उनके पैर में मोच आ जाती है। चार-पाँच लडकियाँ खिलाखिलाकर हँस पड़ती हैं। कमलबोस ने उनको देखा तो उन्हें चंदा ही नज़र सामने आती है। बाद में पता चल जाता है कि वह चंदा ही थी।

कमल बोस इलाक के लिए एक वैद्यजी के घर चले जाते हैं। दोनों दवाइयों के बार में बाते करते थे। चंदा भी माँ की वजह है वह राजलक्ष्या की मरीज रहती है। सारे इलाज से वह हार जाती है। वैद्यजी कोशिश करते करते थक जाते हैं मगर वह बच नहीं सकती। ···"आयुर्वेदिक और यूनानी दवाइयों में ऐसा बिलकुल नहीं है। हाँ···यही खासियत है। और इस पेशे की सबसे बड़ी खासियत है···पर सेवा।"[79]

वैद्यजी ने एक लेप लगाकर कमल बोस के पैर पर पट्टी बाँध दी और चलने के लिए छडी का ही एक सहारा दे दिया था। "दुर्गा श्रेष्ठ के घर··· अच्छा, अच्छा। तुम्हारी मोच तो इसी से ठीक हो जायेगी। कल तक आराम से

चलने लगोगे···दर्द रह जाये तो चले आना···।"[80] पढ़ने के लिए वह जंगल की ओर निकल पड़े थे। पढाई में वह मशगूल थे। फिर एकाएक एक लड़की की हँसने की आवाज सुनाई पड़ी तो कमल बोस ने उसे पहचाना कि वह पैर फिसलकर गिरने पर हँस पडी थी वही चंदा थी।

चन्दा वैद्यजी की बेटी है जिसने कमल बोस के मोंच आयी हुई पैर पर पट्टी बांधने का काम किया था। जड़ी बूटियाँ बीकने के लिए वह आती है। ····"यही कि तुम डाक्टरी का इम्तहान दे रहे हो। यहाँ रह कर एकान्त में पढ़ाई करने आये हो। इसी साल डाक्टर हो जाओगे···अगर पास हो गये तो···।"[81]

कमल बोस और चंदा में काफी परिचय बढ़ता ही जाता है। दोनों एक दूसरे के साथ प्यार भरी शरारते करने लगते हैं। दोनों जुदा न होने का भी वादा करते हैं। आखिर वह दिन आ जाता है वे इन्तहान देने के लिए जानेवाले हैं। चंदा कमलबोस को बिदा देने के लिए रात में ही चली जाती है। उसको पूरा यकीन है कि कमल बोस डाक्टरी इम्तिहान देकर जरूर लौटेंगे। आखिर वे चन्दा को छोड़कर चले जाते हैं। वैद्यजी से उन्होंने आशिर्वाद लिया था। जब कमल बोस चलने लगे थे चंदा देवदार के पेड के नीचे खड़ी रही थी। आखिर वे कलकत्ता चले जाते हैं।

कमलबोस जब कई दिनों बाद लौट आते हैं तो उन्हें वहीं पर न चंदा मिल पाती है और न उसके पिता। वैद्यजी का बीस बरस पहले देहान्त हो चुका था। वैद्यजी के मरने के बाद चंदा बिगड़ी है। उनका स्वभाव बिगड़ता रहता है। कमलबोस का इन्तजार करते करते ही वह थक रही है। लोग भी उसको सताते रहते हैं। उससे शादी करने के लिए कोई भी तैयार नहीं हो पाता। जंगल के एक हरकारे से उसकी शादी हो जाती है। जो चन्दा की उम्र में काफी बड़ा रहता है। चन्दा को एक लड़की हो जाती है। हरकारे की जंगल के जानवरों द्वारा मौत हो जाती है।

पति की मृत्यु के आठ दस महिनों बाद नौकरी की तलाश में चंदा दार्जिलिंग से सीलीगुड़ी चली जाती है। दार्जिलिंग में ही कमल बोस की उनके दोस्त

प्रशान्त से मुलाकात होती है। कमलबोस कम्पिटीशन की दौड में फँस रहे थे। वह एक सफल आदमी बनना चाहते थे। जिसके लिए बीवी चाहिए, पैसा चाहिए, रिश्तेदार चाहिए। स्वार्थी बनना चाहिए।

कमलबोस प्रशान्त से कहते हैं, "तुम ठीक कह रहे हो, प्रशान्त, मेरे भीतर एक राक्षस ने जन्म लिया था।"[82] कमलबोस दार्जिलिंग के होटल में पड़े तो वैद्यजी और चंदा का चेहरा याद आता है। आखिर वे चन्दा की तलाश में नीली घाटी की ओर निकलते हैं। गाड़ी चलो चलाते उन्हें निरुपमा चन्द्रमोहमन सेन की याद आती है। कमलबोस निरुपमा को छोडकर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। मगर निरुपमा उन्हें जाने नहीं देती और उसी ही रात को वह नींद की दवाइयाँ खाकर खुदकुशी कर लेती है।

कमल बोस चन्दा की तलाश में चले जाते हैं। धौलपुर पहुँचने पर एक पंडित बता देता है कि उनकी पाठशाला में चांदनी नामक एक बच्ची पढ़ने जाती थी। उसके पिताजी नहीं है। मगर तीन साल के बाद बच्ची ने पाठशाला में आना ही बन्द कर दिया था। एक आदमी बताता है कि चंदा डाक्टरनी यहाँ दस बरस पहले ही नीली घाटी से आयी थी।

धौलपुर के एक बूढ़े से पता लगा था चंदा साक्षात देवी के रूप में हैं। गरीबों को वह मुफ्त में दवाइयाँ देती रही है। वैदिक अच्छी तरह से जानती थी। वही कमल बोस सीधे नीली घाटी पर चले जाते हैं - पंडितलाल बहादुर के घर। वही पर पूछताछ करने पर उनका एक आदमी बताता है कि - "यहाँ पड़ोस में चन्दा नाम की एक पगली रही है और एक साल हुआ उसकी मौत हो चुकी थी" उन्हें एक चान्दनी नाम की लड़की थी। पता नहीं अब वह कहाँ गयी होगी।

प्रशान्त को कमल बोस एक खत भी लिखते हैं। अभी तक वे सीलीगुडी में ही ठहरे हुए हैं। वह गली कोठेवालियों की है और वह भटकानेवाली, बीडी पीने वाली लड़की और कोठ नहीं बल्कि चांदनी ही रहती है। बिलकुल चन्दा का दूसरा रूप। कमल बोस चांदनी की तलाश में जब पहली बार कोठे पर चले जाते

हैं तब चांदनी उनका मजाक उडाती है। वे हिम्मत नहीं हारते। कमल बोस चांदनी को गंदे माहौल से बाहर निकालना चाहते थे। वह अपनी बेटी समझ कर पालना चाहते हैं। उनकी गंदी हरकतों को वे फटकारते भी रहे। ..."चंदा। यह तेरी ही बेटी है। तुझसे ही यह मेरी बेटी भी हो सकती थी....।" [83]

चांदनी एक दिन कमल बोस के सामने भयानक संकट का वर्णन करती है। चन्दा कमल बोस का इंतहार करते करते थक जाती है। पच्चीस बरस यूंही बीत जाते हैं। उनकी याद करते करते वह पागल हो जाती है। "इम्तहान हो गये ? तुमने डाक्टरी पास कर ली और वही छोटे से पागलखाने में उनकी मौत हुई थी।" [84] इससे जिससने चान्दनी आक्रोश करने लगती है। दो चार पागल चन्दा की लाश को घेरकर बैठते हैं। उनके एक पागल आधी रात के दरमियान चांदनी के करीब आकर कहता है, "तुम फिक्र मत करो। चन्दा की लाश सबेरा होते ही ठिकाने पर लगा देंगे।

कमल बोस चांदनी को सीधे रास्तें पर लाने की बहुत कोशिश करते रहते हैं मगर वह नहीं आ पाती है। एक दिन कमल बोस के कॉटेज वह चांदनी निकल जाती है। चांदनी वह अपनी बेटी समझकर उसको अपने साथ रखना चाहते हैं। मगर यह सब सफल हो नहीं सकता। जब वे कलकत्ता के लिए चले जाने से तैयार हो जाते हैं। तो चांदनी सहमी हुई थी। हाथ में एक तस्वीर छुपाते हुई रही है आखिर वह कह देती है, "ये तुम्ही हो। बहुत बदल गये, पहचान में तो नहीं आते....।" [85]

कमल बोस बिलकुल बेबस होकर कहते हैं। हाँ चांदनी लेकिन जब तुम मेरा साथ दो मेरी बच्ची शायद राहत की साँस ले सके। मगर चांदनी आखिर में कह देती है, "अब इसमें क्या रखा है....जो माँ" आखिर कमल बोस निराश होकर खाली हाथ लौटते हैं। [86]

अध्याय : 2

संदर्भ

1· मधुकर सिहं - कमलेश्वर
पृष्ठ 182

2· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 10

3· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 23

4· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 29, 30

5· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 44

6· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 112

7· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 114

8· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 112, 113

9· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ
पृष्ठ 117

10· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ, पृष्ठ 117

11· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ, पृष्ठ 118

12· कमलेश्वर - एक सडक सतावन गलियाँ, पृष्ठ 120

13· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 25

14· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 26, 27

15· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 28

16· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 29

17· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 34

18· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 39

19· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 64

20· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 62

21· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 63

22· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 70

23· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 74

24· कमलेश्वर - डाक बंगला, पृष्ठ 101

25· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 40

26· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 40

27· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 41

28 कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 56

29· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 56

30· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 57

31· कमलेश्वर - लौटे हुअे मुसाफिर, पृष्ठ 64, 65

32· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 68

33· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 68

34· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 65

35· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 74

36· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 75

37· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 76

38· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 77

39· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 80

40· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 80

41· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 82, 83

42· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर , पृष्ठ 120

43 कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 136

44· कमलेश्वर - लौटे हुओ मुसाफिर, पृष्ठ 136

45· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 46

46· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 48

47· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 49

48· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 50

49· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 61

50· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 71

51· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 78

52· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 79

53· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 79

54· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 79

55· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 91

56· कमलेश्वर - तीसरा आदमी, पृष्ठ 96

57· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 48

58· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 49

59· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 50

60· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 61

61· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 32, 33

62· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 43

63· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 46

64· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 50

65· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 52

66· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 54

67· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 55

68· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 55

69· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 57

70· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 57

71· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 61

72· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 74

73· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 110

74· कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी, पृष्ठ 112

75· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 5

76 कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 5

77· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 6

78· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 16

79· कमलेश्वर - आगमी अतीत, पृष्ठ 19

80· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 19

81· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 20

82· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 48

83· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 65

84· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 77

85· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 111

86· कमलेश्वर - आगामी अतीत, पृष्ठ 111